UGC

SPECIAL ISSUE

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

International Multilingual Research Journal

Vidyawarta®

Sonopant Dandekar Shikshan Mandali's

S.D.ARTS, V.S.APTE COMMERCE, M.H. MEHTA SCIENCE COLLEGE, PALGHAR

R. H. SAVE LIBRARY

(Knowledge Resource Centre)

Organizes

One Day National Conference

On

EMERGING TRENDS AND TECHNOLOGIES IN LIBRARIES: AN INNOVATIVE SPACE

Wednesday 28th March, 2018

SONOPANT DANDEKAR ARTS, V.S. APTE COMMERCE AND M.H. MEHTA SCIENCE COLLEGE

Kharekuran Road, Palghar (W),
Tal & Dist. Palghar, Maharashtra-401404

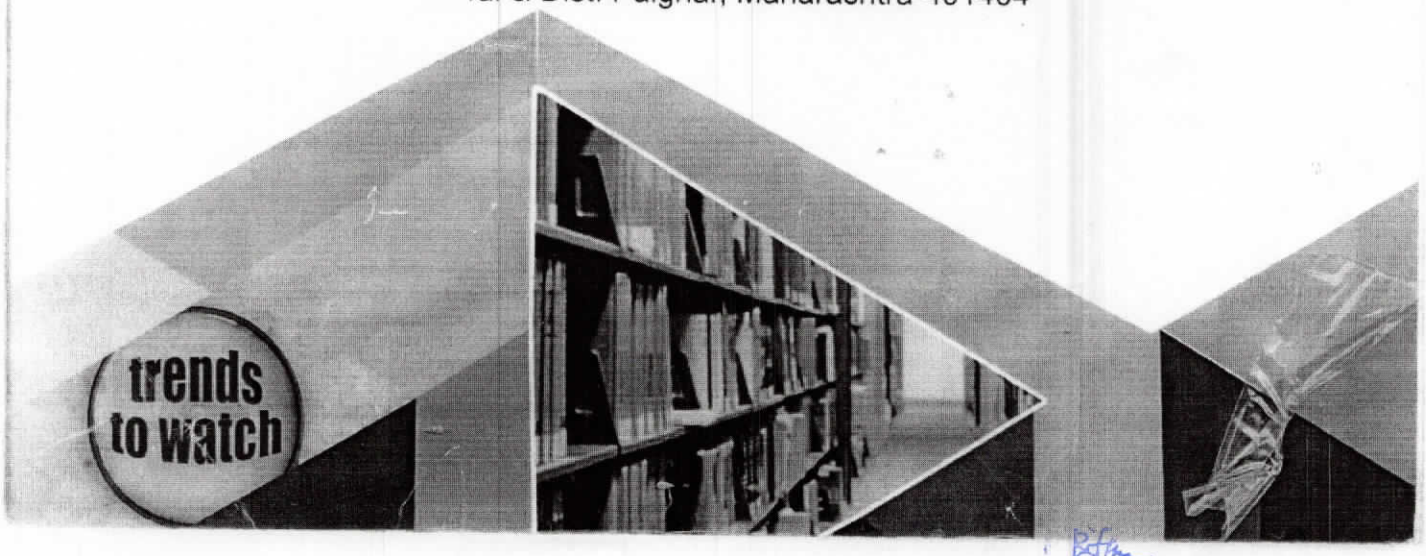

PRINCIPAL
Loknete Gopinathji Munde
Arts, Commerce & Science College
Mandangad, Dist.Ratnagiri.415203

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

Special Issue

Sonopant Dandekar Shikshan Mandali's
S.D.ARTS, V.S.APTE COMMERCE,
M.H. MEHTA SCIENCE COLLEGE,
PALGHAR

GOLDEN JUBILEE INITIATIVE

R. H. SAVE LIBRARY
(Knowledge Resource Centre)

Organizes

One Day National Conference

On

EMERGING TRENDS AND TECHNOLOGIES IN LIBRARIES: AN INNOVATIVE SPACE

Wednesday 28th March, 2018

CHIEF ORGANIZER
Dr.Kiran J. Save
Principal

CONVENER
Mrs. S. K. Godbole
Librarian

SONOPANT DANDEKAR ARTS, V.S. APTE
COMMERCE AND M.H. MEHTA SCIENCE COLLEGE
Kharekuran Road, Palghar (W),
Tal & Dist. Palghar, Maharashtra-401404
Ph.No. 02525-252163/650022

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

PRINCIPAL
... Gopinath Munde
Arts ... Science College
Mandangad, Dist.Ratnagiri.415203

NATIONAL ADVISORY COMMITTEE

Dr. K. Veeranjaneyulu
Librarian, ANGRAU, Hyderabad

Dr. Mohan Kherde,
Director, KRC, SGB Amravati University Amravati

Dr. Vaishali Chaukhande
HOD LIS,SGB Amravati University Amravati

Mr. B. K. Ahire
I/c Director, KRC, University of Mumbai

Dr. Anil Chikate
I/C Director, KRC, NMU Jalgaon

Dr. Shashank Sonawane
Dept. of Lib & Inf Sci, Aurangabad

Dr. Bhupendra Bansod
Librarian PVDT College of Education SNDTWU Mumbai

Dr. Govardhan Aute
Librarian Vivekanande College Aurangabad

Mr. Dilip G. Patil
Librarian Laxmi Shalini Women's College Pezari

Mr. Shahaji Waghmode
Librarian Sonubhau Basvant College Shahapur, Thane

Dr. V. T. Kamble
HOD LIS, Gulbarga University Gulbarga

Dr. Vaishali Khaparde
HOD, LIS, Dr BAMU Aurangabad

Dr. Subhash Chavan
Director, KRC, SNDT Women's University Mumbai

Dr. Jagdish Kulkarni
I/C Director, SRTM University Nanded

Dr. Ramdas Lihitkar
Librarian Institute of Science Nagpur

Dr. G. K. Hambarde
Librarian MGMS College of Engineering Nanded

Mr. Ajay Kamble
Librarian Vartak College Vasai

Mr. Kailash Wadje
Librarian Yeshwant College Nanded

Mr. Ravindra Lathkar
Librarian Pratibha Niketan College Nanded

Dr. B. V. Chavan
Sangamner College, Sangamner

ORGANIZING COMMITTEE

Principal, Dr. Kiran Save
- Chief Organizer

Prof. Mahesh Deshmukh
Academic Administrative Supervisor

Dr. Shirish Pitale
HOD, Dept. of Chemistry

Prof. Vivek Kudu
HOD, Dept. of Marathi

Dr. Yogesh Kulkarni
HOD, Dept. of Business Economics

Prof. Prashant Mogle
Asst. Professor, Dept. of Chemistry

Prof. Rohit Gaikwad
Asst. Professor, Dept. of Philosophy

Dr. Harsh...
Academic Adm...

Prof. B. N. ...
Assot. Professor, Dept. ...

Prof. Asmita ...
Asst. Professor, Dept. ...

Prof. Nashikar ...
Asst. Professor, Dept. ...

Dr. Manish D...
HOD, Dept. of ...

Prof. Ashwin B...
Asst. Professor, Dept. of ...

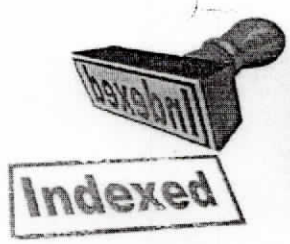

Indexed

Govt. of In...
Trade Marks Re...
Regd. No. 34...

Note : The Views expressed in the published articles,Research Papers etc. are the... ers own. 'Printing Area' dose not take any libility regarding appoval/disapproval by ... university, institute,academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Boa... Publicaton is not necessary. Disputes, If any shall be decided by the court at Beed (Mahara... India)

http://www.printingarea.blogspot.com

PRINCIPAL
L... Gopinathji Munde
Ar... ...ce & Sc... College
Mandangad.Dist.Ratnagiri.415203.

42) Plagiarism Detection Tools in Research Environment
Prof. Thakare N. B., Prof. Kondagurle G. L. & Mr. More Mahesh P., Palghar || 180

43) Green Library: A rousing call to Library Community
Trinayan Borgohain, Guwahati || 183

44) Preservation & Conservation of Library Material
Mrs Patil Ulka Arun, Dist. Sangli || 188

45) Changing Role of College Librarian and Information Literacy Initiatives for...
Dr. V. V. Giri, Dist. Latur || 192

46) Imparting New Students Orientation Programme (NSOP) : A practical app...
Dr. Vijay Ganeshrao Wardikar, Amravati || 196

47) Changing role of Librarian in present Scenario
WAKCHAURE MACHINDRA K., Tal. Palghar || 199

48) DIGITAL LIBRARIES & FUTURE
Mr. Yogesh A. Patil, Dhule || 203

49) ग्रंथालयांचे बदलते स्वरूप : डिजिटल ग्रंथालये
डॉ.मदन दत्तराव झाडे & अमोल साहेबराव वाघमारे, नाशिक || 205

50) संस्थात्मक रिपॉझिटरी आणि ज्ञान व्यवस्थापन
Mr. Dhananjay Dattatray Gurav, Dist.- Ratnagiri || 207

51) ओपन ॲक्सेस इनिशिएट्स
सौ. कांचन तेजेश म्हात्रे, अलिबाग || 210

52) आधुनिक समाज में जनसंचार माध्यमों की भूमिका
जगताप डी. ए., जि. रत्नागिरी || 213

53) Institutional Repositories and Role of College Libraries
Alka D. Wadhwana || 216

54) MANAGERIAL SKILLS IN LIBRARY AND INFORMATION SCIENCES PROFESSIONALS
MR. ANANT M.THORAT, DIST. RAIGAD || 220

55) Digital Preservation and Digital Libraries
Anjali P. Navalkar, Pune || 227

https://sites.google.com/site/vidyawartajournal | http://www.vidyawarta.blogspot.com

PRINCIPAL
Loknete Gopinathji Munde
Arts ... Science College
Mandangad.Dist.Ratnagiri.415203

MAH MUL/03051/2012 UGC Approved Sr.No.62759 Vidyawarta® March 2018 Special Issue 0213
ISSN: 2319 9318

52

आधुनिक समाज में जनसंचार माध्यमों की भूमिका

जगताप डी. ए.
प्रथपाल,
[illegible] गोपीनाथजी मुंडे कला, वाणिज्य व विज्ञान
महाविद्यालय, मु.पो. मंडणगड, ता. मंडणगड,
जि. रत्नागिरी

****

प्रस्तावना :—

'जनसंचार माध्यम' का अर्थ बडा ही व्यापक [illegible] प्रभावकारी है। जनसंचार माध्यम का तात्पर्य उन [illegible] साधनो के अध्ययन एवं विश्लेषण से है, जो एक [illegible] बहुत बडी जनसंख्या के साथ संचार या संबंध [illegible] करने में सहायक होते है। जनसंचार या जन [illegible] का शाब्दिक अर्थ है जनसाधारण से अधिकाधि[illegible] निकट संबंध। भारत में प्राचीन काल में लोकमत [illegible] जानने के लिए जिन साधनों का प्रयोग किया जाता [illegible] आज के वैज्ञानिक युग मे उपयोगी नही रहें। [illegible] था, जब राजा अपनी जनता की रुचि को [illegible] के लिए गुप्तचर व्यवस्था पर पूर्णत: निर्भर रहता [illegible] लेकिन आज के आधुनिक विज्ञान युग में अनेक [illegible] के साधनों का विकास होता गया और अब ऐसा [illegible] आ गया है, जब लोकसंपर्क के लिए समाचारपत्र, [illegible] प्रसारण तंत्र जैसे रेडियो, टेलीविजन, [illegible] यंत्र आदि साधन माध्यम उपलब्ध है। [illegible] इन साधनो का व्यापक रुप में मनोरंजन, [illegible] व्यापारिक, औद्योगिक तथा राष्ट्रीय–[illegible] माध्यमों के द्वारा किया जाता है। आज [illegible] युग में लोकसंपर्क के सर्वोत्तम माध्यम का [illegible] पत्र करते है। इसके बाद रेडिओ, टेलीविजन, [illegible] और इंटरनेट आदि का स्थान है। नई पीढी को [illegible] माध्यम तथा जनसंचार माध्यम को अवगत करना और जानकारी देना इस आलेख का मुख्य उद्देश्य है।

जनसंचार माध्यम की परिभाषाएँ :—

समाज का कोई क्षेत्र ऐसा नही है, जो संचार के प्रभाव से अछूता हो। हमारी पूरी व्यवस्था सामाजिक संरचना पर ही टिकी है। आज संचार के बिना सामाजिक विकास और आर्थिक प्रगति की कल्पना ही नही की जा सकती है। वैसे देखा जाय, तो 'संचार' शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन शब्द कम्युनिस (ब्वउउनदपे) से हुई है, जिसका अर्थ है एक समान होना, एक–दूसरे के विचारों को जानना।

जनसंचार माध्यम की विभिन्न विद्वानों ने अलग अलग तरीके से परिभाषाएँ दी हैं, जो निम्नानुसार है–

१. डेनिस मैक्वेल के अनुसार यह 'एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक अर्थपूर्ण संदेशों का आदान–प्रदान है।'

२. डॉ. मरी के अनुसार 'संचार सामाजिक उपकरण का सामंजस्य है।'

३. लुकिव पाई के अनुसार 'सामाजिक प्रक्रियाओं का विश्लेषण ही संचार है।'

जनसंचार माध्यमों का उद्देश्य :—

जनसंचार माध्यमों का मूल उद्देश्य समाज में घटित घटनाओं को समाज के सामने रखना होता है। अपने विचारों, भावों और सूचनाओं को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाना ही जनसंचार का मुख्य कार्य होता है। हालांकि यह माना जाता है कि संचार माध्यम का मुख्य उद्देश्य सूचनाएँ पहुंचाना होता है। इन संचार माध्यमों में समाचार पत्र, रेडिओ, टेलीविजन, इंटरनेट आदि का महत्व बहुत अधिक है। इनसे जुडी हुई पत्रकारिता को आज लोकतंत्र के चौथे खंभे के रूप में जाना जाता है। इनके मुख्य तीन उद्देश्य है–सूचना पहुंचाना, मनोरंजन करना और शिक्षा देना। वास्तव मे जनसंचार माध्यमों का उद्देश्य समाज में चलनेवाली गतिविधियाँ एवं हलचलों को समाज के सामने लाना है।

जनसंचार माध्यमों का महत्त्व तथा कार्य :—

किसी भी सूचना या विचार या भाव को एक–दूसरे तक पहुँचाना ही संचार का माध्यम कहलाता

PRINCIPAL
Loknete Gopinathji Munde
Arts, Commerce & Science College
Mandangad, Dist.Ratnagiri 415203

है। एक साथ हजारों, लाखों लोगों तक सूचना को पहुंचाना ही संचार या जनसंचार या मास कम्युनिकेशन मीडिया कहलाता है। वर्तमान युग सूचना का युग है। हम संचार के युग में जी रहे हैं। आज पूरी दुनिया इंटरनेट के जरिए करीब आ गयी है। इसलिए संचार माध्यम का प्रमुख कार्य मनोरंजन करना, सूचना का आदान–प्रदान करना, लोगों में विश्वास जागृत करना, सभी प्रकार की सूचनाओं को समाज तक पहुचाना, समाज–जागृती करना है। ठीक उसी प्रकार, जन समूह की आवश्यकताओं, रुचि आदि को ध्यान में रखकर, जनसंपर्क विज्ञान और विभिन्न कार्यक्रमों को प्रसारित करना आदि सभी प्रकार के कार्य जनसंचार माध्यम के दुवारा किए जाते है। आज सभी क्षेत्रों में जनसंचार माध्यमों ने प्रवेश कर लिया है। रेडियो तथा टेलीविजन कार्यक्रमो के दुवारा राजनीतिक गतिविधियाँ, मनोरंजन, शिक्षण–प्रशिक्षण, औद्योगिक और व्यापारिक जानकारी, ऐतिहासक तथा भौगोलिक जानकारी, पर्यटन संबंधी जानकारी आदि से विविध जन समुहों को अवगत किया जाता है। यही जन संचार माध्यमों का प्रमुख कार्य है।

जनसंचार माध्यम : एक सूचना स्त्रोत :—

जनसंचार माध्यम समाज जीवन में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। क्योंकि वह सामाजिक संदर्भो से जुडा है। जनसंचार माध्यमों ने हमें मनोरंजन के साथ ही सामाजिक, सांस्कशतिक, साहित्यिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि गतिविधियों से प्रभावित किया है। ऐसा कोई क्षेत्र नही है कि जहाँ जनसंचार माध्यम नहीं पहुंच पाया है। सामाजिक क्षेत्र में तो जनसंचार माध्यमों का प्रभाव बहुत गहरा है। हमारे जीवन में जनसंचार माध्यमों ने इतना सशक्त ढंग से प्रवेश किया है कि अब उनके बिना जीवन की कल्पना करना संभव नहीं है। सुबह से शाम तक समाचारपत्र, टेलिफोन, मोबाईल, कम्प्युटर, इंटरनेट, टेलीविजन आदि हमारी पहुँच के दायरे में रहते हैं। जन संचार माध्यमों के कारण ही हमारे जीवन में काफी परिवर्तन आ गया है।

विभिन्न राजनीतिक संगठन भी अपने राजनीतिक वर्चस्व को बनाये रखने हेतु संचार माध्यमों द्वारा अपने विचारों को जन सामान्य तक प्रेषित ... और औद्योगिकीकरण से संबधित सूचना ... माध्यमों के द्वारा ही प्रसारित की ... जनसंचार तंत्र या माध्यम की स्थापना से ... देशों की प्रगति सम्भव है। आज समाज ... माध्यम एक महत्वपूर्ण सूचना स्त्रोत ...

जनसंचार माध्यम और पुस्तकालय

पुस्तकालय एक ऐसी जगह है, ... माध्यमों का भांडार उपलब्ध रहता है। ... को एकत्रित रखने और उपभोक्ताओं या ... उपलब्ध कराने की अहम् भूमिका पुस्तकालय ... होती है। प्राचीन काल से आज तक के ... ज्ञान की उपलब्धि पुस्तकालयों में स्थित ... आने पर या यह सामग्री पाठकों को उपलब्ध ... जाती है। इसी कारण जनसंचार माध्यम ... अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। आज के वर्तमान ... 'पुस्तकालय' की संकल्पना पुरी तरह से बदल ... आज उसे समाज में 'सूचना केंद्र' के नाम ... जाता है। जनसंचार माध्यम और पुस्तकालय ... एक–दूसरे के पूरक हैं। एक का काम ज्ञान ... करना है, तो दूसरे का काम उपलब्ध ज्ञान को ... रखना और समय आने पर समाज को देना है। ... माध्यम के जादातर स्त्रोत पुस्तकालय में ज्ञान ... में हमे मिलते हैं। इसका उपयोग हम अपने ... बढावा देने के लिए करते है। अत: पुस्तकालय ... जनसंचार इन दोनों का समाज के जीवन में ... महत्त्वपूर्ण स्थान है।

जनसंचार माध्यमों के प्रकार :—

अनेक लोग समाचारपत्र पढते है, रेडियो ... है तथा टेलीविजन देखते हैं। ये सभी जन संचार माध्यम है। लेकिन इसके अलावा, अन्य माध्यमों ... भी हम सूचनाएँ प्राप्त कर सकते है। साथ ही, ... कंपनियों के विभागों द्वारा उपलब्ध करायी जानेवाली ... प्रचार–सामग्री भी संचार का माध्यम साबित ... अत: जनसंचार माध्यम को तीन मुख्य भागों में ... जा सकता है– १. मुद्रित माध्यम, २. श्रव्य माध्यम और ३. दृश्य–श्रव्य माध्यम।

मुद्रित माध्यम :—

PRINCIPAL
Loknete Gopinathji Munde
Arts Commerce & Science College
Mandrup ...d. Dist. Ratnagiri 415203

मुद्रित माध्यमों की एक सामान्य विशेषता यह है कि उनमें कागज और स्याही की सहायता से शब्दों को अंकित किया जाता है। इनका स्वरुप टेलीविजन और चलचित्र से एकदम अलग है। इन माध्यमों में शिक्षा से लेकर खेती—बाडी, खेलकूद, स्वास्थ्य, सिनेमा, टेलीविजन के कार्यक्रम, भविष्यवार्ता के साथ ही विश्व के विभिन्न समाचार प्रकाशित होते हैं। समाचार पत्रों के माध्यम से प्रति दिन घटनेवाली घटनाओं की जानकारी मिलती है। पत्रिकाओं का प्रकाशन समाचार पत्रों की तरह प्रति दिन न होकर साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, द्वैमासिक, त्रैमासिक आदि के रूप में होता है। इसमें विविध विषयो का विस्तार से विश्लेषण किया जाता है। समाचारपत्र, विविध प्रकार की पत्रिकाएँ, पुस्तकें, शोध पत्रिकाएँ, रिपोर्ट आदि मुद्रित माध्यमों के द्वारा सामाजिक विचारों, सरकार की योजनाओं तथा नीतियों के बारे में जानकारी देकर लोगों में जागरुकता निर्माण की जाती है।

श्रव्य माध्यम :—

यह सूचना क्षेत्र के प्रसारण का एक सशक्त माध्यम है, जिसे सिर्फ सूना जा सकता है। मुद्रित माध्यमों की तरह इसकी सूचनाओं को पढा या देखा नहीं जा सकता है। रेडियो एक श्राव्य माध्यम है, जिसमें समाचार, विज्ञापन, मनोरंजन, स्वास्थ्य, खेल आदि से संबंधित सूचनाओं का प्रसारण किया जाता है। मुद्रित माध्यमों का लाभ केवल साक्षर लोगों को ही मिलता है लेकिन इन श्रव्य माध्यमों का लाभ निरक्षरों सहित सभी लोगों मिलता है। रेडीयो में प्रसारित होने वाले समाचारों को यदि ठीक से न सून लिया जाए, तो वे छूट जाते है। परंतु समाचार पत्र में ऐसा नहीं होता है। क्योंकि उन्हें दुबारा पढा जा सकता है। श्रव्य माध्यम के द्वारा मनोरंजन, संगीत, शैक्षिक कार्यक्रम, ऑडिओ कैसेट आदि के जरिए समाज जागृती का कार्य किया जाता है।

दृश्य—श्राव्य माध्यम :—

टेलीविजन, वीडियो कॅसेट, डिस्क, डीवीडी आदि सर्वाधिक प्रभावशाली जनसंचार माध्यम है। यह आधुनिक माध्यम व्यक्तिगत और सामुहिक उपयोग किये जाते है। टेलीविजन एक दृश्य—श्राव्य माध्यम है। इसका निर्माण मनोरंजन, समाचार, टिप्पणी विश्लेषण, व्याख्यान, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि के प्रचार हेतु किया जाता है। आज के वर्तमान युग में मल्टीमीडिया के प्रयोग के द्वारा दृश्य—श्रव्य माध्यमों को अधिक से अधिक उन्नत बनाया जा रहा है। आज टेलीविजन की वजह से किसी भी घटना के तत्काल समाचार हम तक पहुँचते है। टेलीविजन पर समाचार के साथ—साथ अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा होती है। यह वैश्विक स्तर का जनसंचार का माध्यम है, जिसके द्वारा हम चलचित्र सहित सभी बाते अपनी आँखों से देखते हैं और उसे सुन भी सकते है। यह इस जनसंचार माध्यम की बडी महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

इंटरनेट यह भी एक आज के विज्ञान युग का महत्वपूर्ण संचार—साधन है। इसके माध्यम से सारी दुनिया आज एक—दूसरे के नजदीक आ गयी है, एक—दूसरे से जुड गयी है। संसार के किसी भी कोने से कोई भी सूचना एक ही पल में इसके माध्यम से भेजी या प्राप्त की जा सकती है। इसके द्वारा मनोरंजन, स्टॉक मार्केट, शिक्षा, व्यवसाय, मौसम, खेलकूद आदि के अतिरिक्त अन्य किसी भी क्षेत्र की जानकारी प्राप्त की जा सकती है। इंटरनेट एक तरह से मुद्रित दृश्य—श्रव्य माध्यमों का मिला जुला रुप है। इंटरनेट पर ऐसी कई सामाजिक वेबसाइटस् उपलब्ध है, जिनके माध्यम से हम आपने विचार एक—दूसरे को शेअर करते है। ठीक इसी प्रकार मोबाईल भी आज आम समाज का एक महत्वपूर्ण संचार—साधन बन गया है। हम मोबाईल के माध्यम से एस्‌एम्‌एस्‌, फोटो खीचने, फोटो भेजने, बातचीत करने, रिकार्ड करने, फिल्म देखने, गाने सुनने तथा समाचार सुनने—देखने आदि कार्य कर सकते हैं।

निष्कर्ष :—

आज के आधुनिक युग मे जनसंचार माध्यम एक महत्वपूर्ण सूचना स्रोत बन गया है। इसमें अनेक प्रकार के जन संचार माध्यम आते हैं, जो उपलब्ध ज्ञान को एक—दूसरे को शेअर कर सकते हैं। मुद्रित, श्रव्य, दृश्य—श्रव्य ओर इलैक्ट्रॉनिक—सभी प्रकार के माध्यम अपनी ओर से समाज को सूचनाएं देने का कार्य करते है। जनसंचार माध्यमो के इस महत्वपूर्ण कार्य के कारण ही उसे लोकतंत्र का चौथा खंभा बताया जाता

PRINCIPAL
Loknete Gopinathji Munde
Arts Commerce & Science College
Mandangad.Dist.Ratnagiri.415203

है। आज समाज में इन संचार माध्यमों का विस्तार बडी तेजी से हो रहा है। साथ ही इन माध्यमों का क्षेत्र अत्यंत व्यापक हो चुका है। इसका महत्त्वपूर्ण कारण यह है कि इसके द्वारा बडी तेजी से विशाल जनसमुदाय को संदेश प्रसारित किया जाता है। इसीकारण ही समाज में जनसंचार माध्यमों का महत्त्व बढ रहा है।

संदर्भ :—

०१. पत्रकारिता — विधाएँ और आयाम, कुमार समरेन्द्र, आशा बुक्स, दिल्ली ।

०२. ग्रंथालय, सूचना और समाज, उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।

०३. हिंदी पत्रकारिता एंव जनसंचार, शर्मा ठाकुरदत्त, विनय प्रका. कानपुर ।

०४. सोशल मीडिया, पटेल योगेश, पुस्तकमहल प्रका., दिल्ली

वेबसाइट :—

१. https://www.wikipedia.org/wiki/.

❑❑❑

53

Institutional Repositories an[d] Role of College Libraries

Alka D. Wadhwana
Librarian,
KES' Shroff College of Arts & Commerce

****

Abstract:

Institutional repositories (IRs) a[re] increasingly becoming an essential compone[nt] of academic institutions. They offer t[he] opportunity for academic libraries to collect a[nd] preserve and disseminate the intuitio[nal] scholarly output. Even the college libraries a[re] expected to have their Institutional Repositorie[s]. This paper explores need, benefits, as well a[s] the challenges of institutional repositories of t[he] colleges to make sure it is worthwhile to t[he] library as well as the institution.

KEYWORDS: Institutional Repositories, Scholar[ly] Communications, Open Access, College librar[ies]

1. Introduction:

An institutional repository showcase[s] scholarly and research output to the wid[er] community, and significantly helps i[n] institutional advancement and outreach. It ha[s] the benefit of sharing and marketing researc[h] with others. It also provides an opportunity t[o] raise profile and brand awareness of a[n] institution, faculty and students to the glob[al] community.

It is mandatory for all the colleges to ge[t] accredited by National Assessment an[d] Accreditation Council (NAAC). NAAC als[o] perceives IR as one of the tools to provid[e] maximum access to the library collection. Hence it is necessary for the college librarie[s] also to build their Institutional Repositories. Building an effective and successful institution

PRINCIPAL
Lokneta Gopinathji Munde
Arts Commerce & Science College
Mandangad, Dist. Ratnagiri 415203